Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)
*** Vol-3* *Issue-1* *January 2026***
www.researchvidyapith.com **ISSN (Online): 3048-7331**

बाणभट्ट की आत्मकथा में भारतीय सांस्कृतिक चेतना

डॉ० प्रियंका गुप्ता
अस्सिटेंट प्रोफेसर (अतिथि), मिदनापुर सिटी महाविद्यालय, मिदनापुर

Article Info: *(Recieved- 16/11/2025, Accept- 16/12/2025, Published- 10/01/2026)*
DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i10010

सार

हिंदी साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। इस परंपरा में हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित बाणभट्ट की आत्मकथा एक विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण कृति के रूप में प्रतिष्ठित है। यह कृति केवल एक ऐतिहासिक पात्र के जीवन का वर्णन नहीं करती, बल्कि भारतीय संस्कृति के विविध आयामों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। उपन्यास में सातवीं शताब्दी के सामाजिक जीवन, धार्मिक विचारधारा, नारी–जीवन, प्रकृति–प्रेम, कला–संवेदना और मानवतावादी दृष्टिकोण का अत्यंत सजीव चित्रण मिलता है।

इस शोध–लेख का उद्देश्य उपन्यास में निहित सांस्कृतिक तत्वों का विश्लेषण करना है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि लेखक ने इतिहास और कल्पना के समन्वय के माध्यम से भारतीय संस्कृति के मूलभूत मूल्योंकृ सहिष्णुता, करुणा, समन्वय और लोकमंगलकृको अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। इस प्रकार यह कृति भारतीय सांस्कृतिक चेतना की गहन अभिव्यक्ति के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

प्रमुख शब्द– भारतीय संस्कृति, ऐतिहासिक उपन्यास, नारी–दृष्टि, मानवतावाद, सांस्कृतिक समन्वय

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का स्वरूप अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। यह केवल रीति–रिवाजों और परंपराओं का समूह नहीं है, बल्कि मनुष्य के संपूर्ण जीवन–दर्शन का समन्वित रूप है। किसी भी समाज की संस्कृति उसके साहित्य में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त होती है। साहित्य केवल कल्पना का परिणाम नहीं होता, बल्कि वह समाज के जीवन, विचार और अनुभवों का संवेदनात्मक रूप होता है। इसी कारण किसी युग के साहित्य का अध्ययन उस युग की सांस्कृतिक चेतना को समझने का महत्वपूर्ण साधन बन जाता है।

हिंदी साहित्य में अनेक लेखकों ने भारतीय संस्कृति के विभिन्न रूपों को अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है, किंतु हजारीप्रसाद द्विवेदी का स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वे केवल साहित्यकार ही नहीं बल्कि एक गहन सांस्कृतिक चिंतक भी थे। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति की उदारता, सहिष्णुता और समन्वय की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनकी प्रसिद्ध कृति बाणभट्ट की आत्मकथा हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास है। यह उपन्यास संस्कृत साहित्य के महान लेखक बाणभट्ट के जीवन को आधार बनाकर लिखा गया है, जो सम्राट हर्षवर्धन के दरबार के प्रसिद्ध कवि थे। द्विवेदी जी ने इस ऐतिहासिक पात्र के माध्यम से उस युग के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अत्यंत सजीव चित्र प्रस्तुत किया है।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और सामाजिक जीवन

बाणभट्ट की आत्मकथा में चित्रित सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सातवीं शताब्दी के उस ऐतिहासिक काल से संबंधित है जब उत्तर भारत में हर्षवर्धन का शासन था। यह काल भारतीय इतिहास में सांस्कृतिक और बौद्धिक उन्नति के लिए प्रसिद्ध रहा है। इस समय शिक्षा, साहित्य, कला और धर्म के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास हुआ। विभिन्न मतों और संप्रदायों के बीच सहिष्णुता और संवाद की भावना भी इस काल की विशेषता थी।

उपन्यास में इस ऐतिहासिक वातावरण का अत्यंत सजीव चित्रण मिलता है। लेखक ने उस समय के नगरों,

राजदरबारों और ग्रामों के जीवन का अत्यंत विस्तृत वर्णन किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि समाज केवल राजसत्ता के इर्द–गिर्द ही नहीं घूमता था, बल्कि सामान्य जनजीवन भी उतना ही महत्वपूर्ण था। किसानों, साधुओं, विद्वानों, कलाकारों और साधारण नागरिकोंकृसभी का जीवन इस सांस्कृतिक वातावरण का अंग था।

द्विवेदी जी ने सामाजिक जीवन के चित्रण में अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया है। वे केवल बाहरी घटनाओं का वर्णन नहीं करते, बल्कि मानव संबंधों और सामाजिक संरचना की गहरी परतों को भी उजागर करते हैं। समाज में विभिन्न वर्गों और समुदायों के बीच पारस्परिक संबंधों का चित्रण अत्यंत यथार्थवादी है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में विविधता के बावजूद एक प्रकार की सांस्कृतिक एकता विद्यमान थी।

लेखक के अनुसार समाज की वास्तविक शक्ति उसके नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों में निहित होती है। इस संदर्भ में वे संकेत करते हैं कि मनुष्य की गरिमा केवल उसकी सामाजिक स्थिति से निर्धारित नहीं होती, बल्कि उसके आचरण और मानवीय गुणों से निर्धारित होती है। इसी कारण उपन्यास में अनेक ऐसे पात्र दिखाई देते हैं जिनका सामाजिक स्तर भले ही साधारण हो, किंतु उनके भीतर मानवीय संवेदनाएँ अत्यंत गहरी होती हैं।

इस प्रकार उपन्यास में प्रस्तुत सामाजिक जीवन भारतीय संस्कृति के उस मूलभूत स्वरूप को व्यक्त करता है जिसमें विविधता, सहिष्णुता और मानवीय संबंधों की गरिमा को अत्यंत महत्व दिया गया है।

नारी–जीवन का सांस्कृतिक स्वरूप

भारतीय संस्कृति में नारी को सदैव सम्मान और गरिमा का स्थान प्राप्त रहा है। यह भावना उपन्यास में भी अत्यंत स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। लेखक ने नारी को केवल सौंदर्य की वस्तु या पारिवारिक भूमिका तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे एक स्वतंत्र, संवेदनशील और विचारशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। उपन्यास में भट्टिनी, निपुणिका और अन्य स्त्री पात्रों के माध्यम से नारी के विविध रूपों का चित्रण किया गया है। इन पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि नारी केवल करुणा और ममता की प्रतीक ही नहीं है, बल्कि वह आत्मसम्मान और बुद्धिमत्ता की भी धनी है। लेखक ने नारी के भीतर निहित संवेदनशीलता और आत्मबल को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

इस संदर्भ में लेखक का एक कथन विशेष रूप से उल्लेखनीय है–

"नारी केवल देह नहीं है, वह संवेदना और करुणा की वह धारा है जो जीवन को पवित्र बना देती है।"

यह कथन नारी के प्रति लेखक की गहरी सम्मान भावना को व्यक्त करता है। यहाँ नारी को जीवन की नैतिक शक्ति के रूप में देखा गया है।

नारी–जीवन के चित्रण में द्विवेदी जी ने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के उस आदर्श को भी सामने रखा है जिसमें नारी को परिवार और समाज की नैतिक आधारशिला माना जाता है। नारी की करुणा, त्याग और सहनशीलता समाज को मानवीय मूल्यों से जोड़ती है।

इस प्रकार उपन्यास में नारी–जीवन का चित्रण केवल साहित्यिक सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि वह भारतीय सांस्कृतिक चेतना के गहरे मूल्यों को भी अभिव्यक्त करता है।

प्रकृति और सौंदर्यबोध

द्विवेदी जी का साहित्य प्रकृति के प्रति गहरे प्रेम और सौंदर्यबोध से परिपूर्ण है। उपन्यास में प्रकृति का चित्रण अत्यंत काव्यात्मक और संवेदनशील शैली में किया गया है। प्रकृति के विविध रूपकृवन, नदी, पर्वत, चाँदनी रात, ऋतु परिवर्तनकृकथा के वातावरण को अत्यंत सुंदर और जीवंत बना देते हैं। लेखक ने प्रकृति को केवल दृश्य पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है, बल्कि उसे मानवीय भावनाओं के साथ जोड़कर चित्रित किया है। प्रकृ ति का सौंदर्य पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करने का माध्यम बन जाता है।

उपन्यास में एक स्थान पर लेखक लिखते हैं–

"चाँदनी से नहाया हुआ वन प्रदेश मानो किसी स्वप्न लोक की झाँकी प्रस्तुत कर रहा था।"

यह वर्णन केवल प्रकृति के दृश्य सौंदर्य का चित्रण नहीं है, बल्कि उस सौंदर्य के माध्यम से उत्पन्न होने वाली भावनात्मक अनुभूति को भी व्यक्त करता है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। मनुष्य और प्रकृति के बीच गहरा संबंध माना जाता है। उपन्यास में भी यह संबंध स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रकृति मानव जीवन की सहचरी बनकर उपस्थित होती है और उसके सुख–दुख में सहभागी बनती है। इस प्रकार प्रकृति–चित्रण के माध्यम से लेखक ने भारतीय सौंदर्यबोध की उस परंपरा को जीवंत किया है जिसमें प्रकृति को आध्यात्मिक और भावनात्मक अनुभव का स्रोत माना जाता है।

मानवतावादी दृष्टिकोण

द्विवेदी जी के साहित्य की एक प्रमुख विशेषता उनका गहरा मानवतावादी दृष्टिकोण है। उनके अनुसार मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म मानवता है। उपन्यास में यह विचार बार–बार प्रकट होता है कि मनुष्य की वास्तविक पहचान उसके जन्म, जाति या सामाजिक स्थिति से नहीं बल्कि उसके कर्म और उसके मानवीय गुणों से होती है।

लेखक लिखते हैं–

"मनुष्य का गौरव उसके जन्म में नहीं, उसके कर्म और उसकी करुणा में है।"

यह कथन स्पष्ट करता है कि लेखक मनुष्य की गरिमा को उसकी मानवीय संवेदनाओं में देखते हैं। करुणा, प्रेम और सहानुभूति जैसे गुण ही मनुष्य को महान बनाते हैं। उपन्यास में विभिन्न पात्रों के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि समाज की वास्तविक शक्ति उसके मानवीय मूल्यों में निहित होती है। जब मनुष्य अपने भीतर की करुणा और सहानुभूति को पहचानता है, तभी वह सच्चे अर्थों में सांस्कृतिक रूप से विकसित होता है। यह मानवतावादी दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति की उस परंपरा से जुड़ा हुआ है जिसमें समस्त मानवता को एक परिवार के रूप में देखा गया है। इस दृष्टि से उपन्यास केवल ऐतिहासिक कथा नहीं है, बल्कि मानव जीवन के सार्वभौमिक मूल्यों की भी अभिव्यक्ति है।

सांस्कृतिक समन्वय

भारतीय संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी समन्वयात्मक प्रवृत्ति है। यहाँ विभिन्न धर्मों, विचारधाराओं और परंपराओं के बीच संवाद और सहअस्तित्व की भावना दिखाई देती है। उपन्यास में भी यह समन्वयात्मक दृ ष्टि स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएँ एक–दूसरे के साथ सहअस्तित्व में दिखाई देती हैं।

लेखक लिखते हैं–

"धर्म का सार किसी एक मत में नहीं, बल्कि उस उदार भावना में है जो सभी प्राणियों के कल्याण की कामना करती है।"

यह कथन भारतीय संस्कृति की उदारता और व्यापकता को व्यक्त करता है। यहाँ धर्म को संकीर्ण मतवाद के रूप में नहीं देखा गया है, बल्कि मानव कल्याण की व्यापक भावना के रूप में समझा गया है। द्विवेदी जी के अनुसार संस्कृति का वास्तविक स्वरूप तभी प्रकट होता है जब विभिन्न परंपराएँ एक–दूसरे के साथ संवाद करती हैं और एक व्यापक मानवीय दृष्टिकोण का निर्माण करती हैं। इस प्रकार उपन्यास में सांस्कृतिक समन्वय की भावना भारतीय संस्कृति की उदार और व्यापक दृष्टि को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि बाणभट्ट की आत्मकथा केवल एक ऐतिहासिक कथा नहीं है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना का अत्यंत महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज है। इसमें सातवीं शताब्दी के सामाजिक जीवन, नारी–दृष्टि, प्रकृति–प्रेम, मानवतावाद और सांस्कृतिक समन्वय का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। द्विवेदी जी ने इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय करते हुए उस युग के जीवन को जीवंत बना दिया है। उनके लेखन में भारतीय संस्कृति के मूलभूत मूल्यकृसहिष्णुता, करुणा, समन्वय और मानवताकृअत्यंत प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। इस प्रकार यह कृति न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची

1. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, 'बाणभट्ट की आत्मकथा', नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 2015, पृ. 87
2. वही, पृ. 112
3. वही, पृ. 154

4. वही, पृ. 201

Cite this Article

'डॉ० प्रियंका गुप्ता', "बाणभट्ट की आत्मकथा में भारतीय सांस्कृतिक चेतना", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:1, January 2026.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."